सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय खिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप। (LEF,Chennai)

सितम्बर-अक्तूबर, 2003

कलीसिया को गर्म रखने वाला संयंत्र

पाँच कॉलेज के नौजवान छात्र, जो गिरजा के पादरी पद के लिए दीक्षा-संस्कार लेने से पहले, एक रविवार का दिन लंदन में बिता रहे थे। वे अपने उपदेशों की बजाय कुछ जाने माने प्रचारकों के उपदेशों को सुनने के लिए अधीर थे।

एक गर्म रविवार की सुबह ने उन्हें स्पर्जन टेबरनैकल के मार्ग पर पाया। जब वह दरवाज़ा खुलने का इंतजार कर रहे थे तो एक अजनबी उनके पास आया और बोला, 'श्रीमान, क्या आप गिरजे को गर्म रखने वाला संयंत्र देखना चाहेंगें? ' उस जुलाई के गर्म दिन, उन्हें इसे देखने में खास दिलचस्पी नहीं थी, परन्तु उन्होंने अपनी सहमति दे दी।

वह कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरे और उनके सामने दरवाज़ा खोल दिया गया, उनके गाइड ने कहा, 'वह देखिए श्रीमान, यह है हमारा गर्म रखने वाला संयंत्र !'

उन्होंने अपने सामने ७०० लोगों को सिर झुकाये अराधना सभा पर आशिष के लिए प्रार्थना करते पाया, जो ऊपर टेबरनैकल में आरम्भ होने वाली थी। उनके अजनबी गाइड स्वंय श्रीमान स्पर्जन थे। क्या हमें इस बात का अश्चर्य होता है कि उनके उपदेश आज भी संसार भर में पढ़े जाते हैं? - चुना गया।

मृत्युंजय खिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

परमेश्वर के साथ मूसा का व्यक्तिगत वार्तालाप

निर्गमन (१९:३,५) 'तब परमेश्वर के पास मूसा ऊपर पर्वत पर चढ़ गया और यहोवा ने पर्वत पर से उसे पुकारकर कहा,....इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी बात मानोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे तो सब जातियों में से तुम ही मेरी निज सम्पत्ति बनोगे।'

मूसा पर्वत पर पहुंचा और यहोवा ने उससे बात की और उसे संदेश दिया। आजकल बहुत लोग प्रचार में लगे हैं। लेकिन यह आवश्यक है कि वह संदेश हम परमेश्वर से प्राप्त करें। यह वचन प्रार्थना द्वारा हमें प्रभु से प्राप्त करना चाहिए।

परमेश्वर कहते हैं, 'याद करो, कैसे मैंने तुम्हें उकाब की भाँति अपने पंखों पर उठाया था। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करो तो मेरे लिए विशेष 'खज़ाना' ठहरोगे।' कठिनाईयों के बिना चेले बनना असंभव है। तुम तब तक चेले नहीं बनते जब तक किसी कठिनाई या सताव का सामना न कर लो। प्रत्येक शिष्य इस अनुशासन से गुज़रता है। नहीं तो वह परमेश्वर का सहारा लेना नहीं सीखेगा।

हमने परमेश्वर की दया के अनेक कार्य देखे हैं। लेकिन क्या हम ऐसे प्रगति कर रहे हैं कि परमेश्वर के पर्वत पर पहुँच सकें? मूसा पर्वत पर तीन बार जा सका। बार-बार वह परमेश्वर के सम्मुख पहुँचा और प्रभु ने उसे 'दस आज्ञाएँ' दीं। निर्गमन (२०:२२) 'तब यहोवा ने मूसा से कहा,'तू इस्राएलियों से यों कहना, तुमने तो आप ही देख लिया है कि मैने आकाश से तुमसे बातें की हैं। तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, अर्थात् तुम अपने लिए न तो चांदी के देवता और न ही सोने के देवता गढ़ना।' आज सारे संसार में लोगों ने कैसे इन आज्ञाओं को तोड़ा है। परमेश्वर ने हमें मूर्ति पूजा के अंधकार से छुड़ाया, इस बात के लिए हम उसके कितने आभारी हैं, यह मैं नहीं जानता? लेकिन अब यह बात जानने की है कि हम परमेश्वर के पर्वत पर कितनी ऊंचाई तक पहुँचे हैं?

मूसा समान प्रार्थना में, हमारा परमेश्वर के साथ कितना गहरा वार्तालाप है?

वर्तमान समय में, हम में से अधिकतर को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। कई कम्पनियों में कर्मचारियों को यह कहा जाता हैं, दिन के २४ घण्टे आप हमारे हो। तुम इस उत्पाद के बारे में सोचते रहो और सोते हुए भी इस कम्पनी के उत्पाद को याद रखो। परमेश्वर के साथ वार्तालाप की हमारे मन में गहरी अभिलाषा होनी चाहिए। नहीं तो अनजाने में हम अपने छिछले धर्म में ही संतुष्ट हो जाएँगें।

कम से कम हम मूसा को तीन बार अकेले परमेश्वर से ऐसे बात करते पाते हैं मानो वह उनके सम्मुख बैठो हो !निर्गमन(२४:१८) 'मूसा बादल के बीच प्रवेश करके पर्वत पर चढ़ गया। और चालीस दिन तथा चालीस रात रहा।' चालीस दिन और चालीस रात - यहोवा मूसा के लिए पर्याप्त था !

परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिए हमें एक खास आत्मिक एँव मानसिक खुराक की आवश्यकता है। आज संसार कितनी गंदगी से भरा है। हमें अपने दिमाग के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

मूसा का वार्तालाप...पृष्ठ २ पर

पृष्ठ १ से ... मूसा का वार्तालाप

नहीं तो हम इस बात में भी अंतर नहीं कर पाएँगें कि क्या बुरा है और क्या अच्छा। ऐसे में तुम परमेश्वर के साथ वार्तालाप नहीं कर पाओगे। तुम अपने लिए बहाने ढूँढोगे। जबकि तुम्हें पश्चात्ताप करना चाहिए तुम लगभग यह सोच रहे होगे, 'हाँ, मैं सही हूँ।' हम यह देखकर कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है बहुत खुश हो सकते हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं हैं। परमेश्वर कहते हैं, 'तुम मेरे लिए याजकों का राज्य तथा अनोखा खज़ाना ठहरोगे।' निर्गमन(३२:२०) 'और उसने उनके बनाए हुए बछड़े को लेकर आग में डाल कर भस्म कर दिया और पीसकर चूर चूर कर दिया और उसे जल के ऊपर बिखेर दिया और इस्राएलियों को बरबस पिला दिया।' मूसा दुबारा परमेश्वर के सामने विनती करने जाते हैं। मूसा की यह वेदना भरी पुकार सुनिए, निर्गमन(३२:३१) 'तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा, 'हाय, इन लोगों ने बड़ा पाप किया है, अर्थात् इन्होंने अपने लिए सोने का देवता बनाया है।' उन्होंने इन अनाज्ञाकारी लोगों से कैसा प्रेम किया ! हम अनाज्ञाकारी लोगों से प्रेम नहीं करते, क्या यह बात सच नहीं? क्या अनाज्ञाकारी लोगों के लिए हम अपने आत्मा को दाँव पर लगाने को तैयार हैं? मूसा ने प्रार्थना की, 'इन लोगों को बचाइये और इन्हें छुटकारा दीजिए।'

अपने चारों ओर पाप को देखकर हमारे अन्दर उसके विषय में कुछ करने की इच्छा पैदा नहीं होती। हमारे कुछ रिश्तेदार अब भी अंधकार में हैं। हम यह नहीं जानते कि उनका पाप कितना गम्भीर है। यह तथ्य कि व्यक्ति आपका बेटा है या आपका भाई है या आपकी बहिन है, पाप की गम्भीरता को कम नहीं कर देता। जब हमारे अपने लोगों की बात आती है, हम उसे हल्का समझ लेते हैं। मूसा ने इसे हल्का नहीं जाना। वह कहते हैं कि उनका आत्मा दांव पर है और इसलिए वह पुकारते है, 'मैं अपने आत्मा को खोने के लिए तैयार हूँ, लेकिन आप क्यों नहीं इन्हें माफ कर कर देते?' हम ऐसी प्रार्थना के स्तर तक नहीं पहुँचे हैं। मूसा लाखों अनाज्ञाकारी लोगों के लिए प्रार्थना कर रहे है कि वे नाश न किये जाएँ। ऐसा हो कि परमेश्वर मूसा की भाँति प्रार्थना करने में हमारी सहायता करें।

- जोशुआ दानियल।

पृष्ठ २

मृत्युंजय ख्रिस्त

खानाबदोश स्मिथ की घिसी पेंट

जब खानाबदोश स्मिथ ने अपने पापों से पश्चात्ताप कर अपना मन फिराया, उसके मन में अपने चाचा के उद्धार की गहरी इच्छा उठी। वहाँ के खानाबदोश समाज में बच्चे अपने बड़ों को जिम्मेवारी के विषय में कुछ कहें, यह अच्छा नहीं माना जाता था। इस कारण यह लड़का प्रार्थना करते हुए प्रतीक्षा में लगा रहा।

एक दिन उसके चाचा का ध्यान उसकी पेंट मे एक छेद पर गया, वह बोले, 'रॉडनी, क्या कारण है कि तुम्हारी पेंट बाकी सारी जगह से ज्यादा तुम्हारे घुटनों पर से घिस गई है? '

'चाचा, मैंने यह घुटने टेक कर आपके लिए प्रार्थना करने में घिसाई है कि जीवित परमेश्वर आपसे मिलें और आपको अपनाएँ। '

तब चाचा की आंखों से आंसू छलकने लगे। चाचा ने भतीजे के कंधे पर अपनी बाँह रख कर उसे अपने बगल में करते हुए अपने घुटने टेके और वहीं उसी उद्धारकर्ता (प्रभु यीशु मसीह) के सामने समर्पण किया।

'यदि आप अपने घुटनों पर हैं तो ठोकर नहीं खाएँगे।'

-चुना गया।

प्रार्थना में टिके घुटनों की ताकत

पक्षी अपने पंजों पर खड़े-खड़े सो जाते हैं, लेकिन वे कभी नीचे नहीं गिरते। यह पक्षियों के पैरों में स्नायु होने के कारण होता है। उनकी संरचना इस प्रकार की है कि जैसे ही घुटने मुड़ते हैं, पंजे बंद हो जाते हैं और उनकी पकड़ लोहे की पकड़ के समान होती है। पंजे तब तक नहीं खुलते जब तक घुटने दुबारा सीधे न हो जाएँ। बैठे हुए पक्षियों को, मुड़े हुए धुटने ऐसी मज़बूत पकड़ की योग्यता देते हैं।

क्या यह सत्य नहीं कि मसीहीयों के प्रार्थना में झुके घुटनों में भी ऐसी मज़बूत सामर्थ है? दानियल ने इसे सत्य पाया। विधर्मी वातावरण से घिरे, बुराई के साथ समझौते का लालच, परमेश्वर पर अपनी पकड़ को कमज़ोर करने की इच्छा, इन सब का सामना दानियल ने किया। लेकिन उसने परमेश्वर पर अपने आधार को नहीं खोया। जब दूसरे लड़खड़ा रहे थे, उसने अपनी पकड़ को मज़बूत रखा क्योंकि वह एक प्रार्थनामय व्यक्ति था। उसे प्रार्थना में झुके घुटनों की सामर्थ का ज्ञान था।

सोते हुए पक्षियों से हम इस पकड़ के रहस्य को सीख सकते हैं, ऐसी बातों की पकड़ जो हमारे लिए सबसे मूल्यवान है - ईमानदारी, पवित्रता, समझ, आदर और चरित्र। यह प्रार्थना में झुके घुटनो का रहस्य है, , जो उन सिद्धांतों पर मज़बूत पकड़ की इच्छा द्वारा जीवन को जीने योग्य बनाते हैं। जब हम प्रार्थना द्वारा परमेश्वर को मज़बूती से थामे रहते हैं, हम इस बात पर निश्चिंत हो सकते हैं कि वह मज़बूती से हमें थामे रहेंगे।

-चुना गया।

Beautiful Books

First Floor, Victoria Hotel
Near GPO
CST, Mumbai
Phone : (022) 5633 4763
9:30 AM - 7:00 PM

प्रार्थनामय कलीसिया

प्रेरितों के काम(१२:५) 'इस प्रकार पतरस बन्दीगृह में रखा गया, परन्तु कलीसिया उसके लिए परमेश्वर से लौ लगा कर प्रार्थना करती रही।'

पतरस जेल में क्यों थे? हेरोदेस उनकी हत्या करना चाहता था। हेरोदेस ने याकूब को मरवा डाला था। इससे यहूदी अत्यन्त प्रसन्न हुए। वह यहूदियों को और अधिक प्रसन्न करने के लिए पतरस की हत्या करवाना चाहता था। यहूदी लोग हेरोदेस परिवार की बुराई का समाचार लगाता युनानी राजा सिकंदर को भेजते रहते थे, इससे बचने के लिए हेरोदेस यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता था।

यहूदियों ने सोचा कि यीशु के चेलों के कारण उनका धर्म संकट में पड़ गया है। हेरोदेस ने कलीसिया को सताने के लिए अपना हाथ उठाया। उसका अन्त निकट था। जब किसी मनुष्य का अन्त निकट आता है तो वह व्यक्ति सामान्य से बढ़कर परमेश्वर के राज्य का विरोधी बन जाता है। यह इस बात का चिन्ह है कि उस आदमी का अन्त होने वाला है।

पतरस को इस परिस्थिति की परवाह नहीं थी। अगला दिन उनकी मृत्युदण्ड का दिन था, लेकिन वह चैन की नींद सो रहे थे। पतरस प्रभु यीशु के पद-चिह्नों पर चलना चाहते थे। प्रभु यीशु ने उन्हें कहा था कि तुम अभी मेरे पीछे नहीं चल पाओगे, लेकिन एक समय आयेगा जब वह अपनी मृत्यु तक भी उनके पद-चिह्नों पर चल पाएँगें। पतरस की इच्छा अब पूरी हो रही थी। उस रात वह अपने मन में मृत्यु का अंगीकार कर सोये होंगे। उनका विश्वास इतना ठोस हो गया था। वह लोग जो परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं अपने मन की गहरी इच्छओं को पूरा होता पाएँगे। परमेश्वर हमारी इच्छाओं से बढ़कर हैं। वह हमारी इच्छाओं से
बढ़कर हमें आशिष देंगे। प्रभु यीशु ऐसे ही हैं। पतरस ने मृत्यु से निर्भयता के विश्वास की इच्छा की थी।

कलीसिया लगातार उनके छुटकारे के लिए प्रार्थना कर रही थी। हमें प्रेरितों के कार्यों को देख बड़ा अश्चर्य होता है। कलीसिया प्रार्थना में लगी थी, इस कारण यह कार्य संभव थे। उस कलीसिया में सब लोग एक मन के थे। यदि उनमें से एक भी व्यक्ति अलग विचारों का होता, तो वह सारी शक्ति को व्यर्थ करने का साधन बनता। कुछ लोग बिना विश्वास के हमारी शनिवार की प्रार्थना सभाओं में सम्मिलित होना चाहते हैं। वे आत्मिक सामर्थ को व्यर्थ करने का साधन हैं। यह जीवंत कलीसिया थी और वह उस असंभव को संभव करने के लिए प्रार्थना में जुटी थी, वह था - पतरस की युनानी कारागार से आज़ादी।

पतरस अपने दोनों ओर एक-एक सिपाही से बंधे हुए थे। कैदखाने के बाहर संतरी और सबसे बाहर कारागार मुख्य द्वार पर सिपाही तैनात थे।

कलीसिया की प्रार्थना आत्मिक कैदियों को छुड़ाएगी। बहुत लोग दुष्ट आत्माओं द्वारा बंधें हैं, बुरी इच्छाओं और व्यर्थता के गुलाम हैं। कोई उन्हें नहीं छुड़ा सकता है। कुछ परिवार ऐसे अंधकार में बंधे हैं कि वे सुसमाचार को नहीं समझ पाते।

पिता, माता और बच्चे सभी आत्मिक अंधकार में है। हर प्रकार का पाप वहाँ है और वे दयनीय स्थिति में चकरा रहे हैं। उन्हें कैसे छुड़ाएँ? केवल प्रार्थनामय कलीसिया उन्हें छुड़ा सकती है।

यह सच्ची कलीसिया थी। वे बिना रूके लगातार प्रार्थना में लगे थे। एक स्वर्गदूत आया और दोनों ओर की बेड़ियाँ टूट गई। कई बड़ी संख्या वाली कलीसिया हो सकती हैं, जो बेड़ियों को नहीं तोड़ सकती। यह सच्ची कलीसिया नहीं है। पतरस को चप्पल पहनने का आदेश मिला। वह व्यक्ति, जो आत्मिक गुलामी से आज़ाद हुआ है, शाँति के सुसमाचार का जूता पहनता है (अर्थात्, प्रभु यीशु के सुसमाचार को सुनाने के लिए तैयार रहता है)। पतरस कैदखाने की पहली कोठरी से निकले उसके बाद दूसरी कोठरी से निकले। मन फिराने के बाद हमें भी दो कोठरियों से निकलना पड़ता है। हमें प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु की समानता में एक होना होता है और उनके पुनरूत्थान के नए जीवन में सहभागी होना होता है। जब कलीसिया प्रार्थना में लगी हो तो छुटकारे के अनुभव प्राप्त होंगे। इसके बाद एक लोहे के फाटक को भी पार करना था। हमें संतों के साथ महिमा में सह भागी होना है। यदि हम इकठ्ठे होकर कलीसिया के रूप में प्रार्थना करते रहेंगे, महान घटनाएँ घटेंगी।

- एन दानियल।

सत्य की परख!

इफिसियों (६:१०,११) 'अतः प्रभु और उसके सामर्थ्य की शक्ति में बलवान बनो। परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो जिस से तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सको।'

पृष्ठ ३

लालच का दाना

बालम के विषय में सोचिए। साधारणतय उसे झूठा नबी माने जाता है, लेकिन मैं ऐसा कहीं भी नहीं पाता कि उसके द्वारा की गई नबूवतें झूठी साबित हुई हों, वे सारी पूरी हुई हैं। एक हद तक उसका चरित्र प्रतिभावान था, लेकिन अंत में शैतान ने उसे लालच का दाना डाल कर उसे लुभा लिया और अपने शिकंजे में कर लिया। उसने राजा बालक द्वारा दिये सम्मान और धन के लालच में स्वर्गीय मुकुट को ठुकरा दिया। वह अपने नाश के लिए उल्टे पैर चला। उसका मुख तो परमेश्वर की ओर था, लेकिन वह उल्टे पैर चल कर नरक में गिरा। वह एक धर्मी जन की मृत्यु मरना चाहता था, लेकिन उसने धर्मी जीवन नहीं जीया। यह देख कर बहुत दुख होता है कि कितने लोग जो जीवित परमेश्वर को जानते हैं धन के लोभ के कारण सब कुछ खो बैठते है।

अब गेहाज़ी का प्रसंग लीजिए। यह एक और व्यक्ति है जो लालच के कारण नाश के गर्त में जा गिरा। उसने जितना सीरियाई सेनापति नामान से माँगा उससे अधिक पाया, लेकिन उस पर नामान का कोढ़ (रोग) भी आ पड़ा। ज़रा सोचिए, कैसे उसने अपने स्वामी ऐलिशा, जो परमेश्वर का जन था, की मित्रता को खो दिया। इस शापित इच्छा के कारण आज कितने गहरे मित्र एक दूसरे से अलग हो रहे हैं। घर-परिवार टूट रहे हैं। लोग कुछ रूपयों के लालच में शांति तथा खुशी खो रहे हैं।

क्या दाऊद बेवकूफी भरी तथा हानिकारक लालसा में नहीं गिरा? उसने बतशिबा पर, जो उरिय्याह की पत्नी थी, बुरी नज़र डाली। वह देखने में बहुत सुन्दर स्त्री थी और दाऊद एक व्यभीचारी तथा हत्यारा बना। इस बुरी इच्छा ने उसे पाप के गहरे गर्त में धकेल दिया। उसने इस बोई हुई बुराई के फल को काटा, जो बहुत कष्टदायक था।

मैंने एक धनाढ्य व्यक्ति, जो जर्मन मूल निवासी था, के विषय में सुना। वह देश के पश्चिमी भाग में एक लकड़ी के आरे का मालिक था। उसकी लगभग २० लाख डालर की संपत्ति थी, लेकिन उसे धन का इतना लालच था कि वह एक साधारण मज़दूर बन कर सारे दिन रेल पटरी के कुंदों को ढोता था। यही उसकी मृत्यु का करण बना।

आकान भी अलग नहीं था। यहोशू (७:२०,२१) 'अतः आकान ने यहोशु को उत्तर दिया,'सचमुच, मैंने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध पाप किया है। मैंने ऐसा किया, कि लाट में मैंने शिनार की एक सुन्दर ओढ़नी, दो सौ शेकेल चांधी, और पचास शेकेल वजन की सोने की एक ईंट देखी। तब मैंने लोभ में पड़कर उनको ले लिया। देख, वे मेरे तम्बू के भीतर, भूमि में गड़े हैं, और सब के नीचे चांदी है।' उसने देखा, उसने लालच किया, उसने उठाया और छिपा लिया। वह लालची नज़र थी, जो आकान को उस दुष्ट काम की ओर ले गई, जिस कराण इस्राएली छावनी पर दुख और हार आई।

लालच से सावधान रहो।

- डी एल मूडी।

स्वर्ग की दुकान

अपनी जीवन यात्रा में मैं कई साल पहले एक मार्ग से गुज़र रहा था। मैंने एक विज्ञापन बोर्ड देखा, जिस पर लिखा था - 'स्वर्ग की दुकान'। जैसे ही मैं थोड़ा निकट पहुँचा अचानक दरवाज़ा अपने आप खुल गया। जब मैं ने अपने को संभाला तो अपने को दुकान के अन्दर पाया। मैंने चारों ओर बहुत संख्या में स्वर्गदूतों को खड़े पाया। एक ने मुझे टोकरी देते हुए कहा, 'मेरे बालक ध्यान से सामान खरीदना।' वह हर वस्तु जिसे आदमी की आवश्यकता है, इस दुकान में उपलब्ध है, और जो तुम इस बार न ले जा सको, दुबारा आकर ले जा सकते हो। सबसे पहले मैंने 'धीरज' को उठाया। उसी पंक्ति में 'प्रेम' रखा था। आगे चलकर समझ रखी थी जिसकी आवश्यकता हर समय रहती है. मैंने एक-दो डिब्बे 'बुद्धिमत्ता'

और 'विश्वास' के एक-दो थैली ले लिए। और 'भलाई' की मुझे ज़रूरत थी। मैं 'पवित्र-आत्मा' को पाने से न चूका - वह चारों ओर उपलब्ध था। और उसके बाद कुछ 'सामर्थ' और 'साहस', जिसकी मुझे इस दौड़ में आवश्यकता थी। मेरी टोकरी भरने वाली थी लेकिन मुझे याद रहा कि मुझे 'परमेश्वर के अनुग्रह' की आवश्यकता थी, फिर मैंने 'उद्धार' को चुना, क्योंकि 'उद्धार' मुफ्त मिल रहा था। मैंने इसे अपने और आपके लिए पर्याप्त मात्रा में ले लिया। इसके बाद मैं इन सभी वस्तुओं का दाम चुकाने, आगे काऊंटर पर पहुँचा, क्योंकि मैंने सोचा कि अपने स्वामी (प्रभु यीशु) की इच्छा पूरी करने के लिए मैंने सारी वस्तुओं को ले लिया है। जैसे में आगे बढ़ा मैंने वहाँ 'प्रार्थना' को पाया, उसे भी टोकरी में रख लिया, क्योंकि मैं जानता था कि जैसे ही मैं दुकान के बाहर कदम रखूँगा, हो सकता है मैं पाप में गिरूं। 'शांति' और 'आनंद' बड़ी मात्रा में थे, जो पंक्ति के आखिरी भाग में रखे थे। 'भजन' और 'स्तुति' पास ही टंगे थे, तो मैंने कुछ उठा लिए। तब मैंने स्वर्गदूत से कहा, 'अब बताईये, मुझे कुल कितना बिल चुकाना है?' वह मुस्कुराये और बोले, 'केवल इतना ध्यान रखो कि जहाँ कहीं जाओ इन्हें अपने साथ ले जाओ।' मैंने दुबारा पूछा,'अब सचमुच बताइए, कितना बिल हुआ?' 'मेरे बच्चे', उन्होने कहा,' परमेश्वर ने तुम्हारा बिल, बहुत समय पहले ही चुका दिया है।'

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।